Volume: 4 Issue: 12 Pages: 225-228

विद्यार्थियों के जीवन कौशल का आत्मविश्वास और नैतिक मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन

[*1] कृष्ण कुमार पाण्डेय एवं [2]डॉ. प्रमोद कुमार नायक

[*1] पीएच. डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग एवं सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] कुलपति, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 22/Nov/2025
Accepted: 24/Dec/2025

***Corresponding Author**
कृष्ण कुमार पाण्डेय
पीएच. डी. शोधार्थी (शिक्षा विभाग), आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग एवं सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
जीवन कौशल को व्यक्तिगत कौशल और सामाजिक विशेषताओं के समूह रूप में संज्ञान किया जाता है, जो व्यक्तियों को खुद के साथ या अन्य लोगों और समुदाय के साथ आत्मविश्वास और कुशलता से बातचीत करने के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में कला एंव विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का उनके नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रुप में 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आँकड़ो के संकलन हेतु अंजुम अहमद और सबा परवीन - जीवन कौशल मापनी और डॉ. सुरभि अग्रवाल द्वारा निर्मित मोरल वैल्यू इन्वेन्टरी। प्रमाणीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के प्रकलन के पश्चात् यह पाया गया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर कम प्रभाव पड़ता हैं।

मुख्य शब्द: विद्यार्थी, जीवन कौशल, आत्मविश्वास, नैतिक मूल्य।

प्रस्तावना:

जीवन कौशल को कक्षा के अंदर और कक्षा के बाहर के क्रियाकलापों के माध्यम से विभिन्न तरीकों से सीखा जाता है। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण स्थिति की तंत्र जीवन कौशलों में योगदान करता है। यह अनुकरण और अभ्यास द्वारा सीखे जा सकते हैं। जीवन कौशलों को घर विद्यालय और समाज में व्यावहारिक क्रियाकलापों द्वारा अर्जित किया जाता है। इन्हें जीवन की अन्य स्थितियों में स्थानांतरित किया जा सकता है, जीवन कौशलों का विकास रचनात्मक सूचना पराक्रम और मुक्त चिंतन द्वारा होता है। इसलिए शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों के जीवन अनुभव पर आधारित रचनात्मक उपागम का उपयोग जीवन कौशलों के विकास का सहजीकरण करता है।

जीवन कौशल वे क्षमताएँ और योग्यताएँ होती हैं जो किसी व्यक्ति को विभिन्न जीवन स्थितियों और चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने में मदद करती हैं। यह सिर्फ एक व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धियों या पेशेवर क्षमताओं से संबंधित नहीं है, बल्कि इससे भी आगे जाकर उन क्षमताओं पर केंद्रित होता है जो व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक, और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाती हैं।

जीवन कौशल सकारात्मक और अनुकूल अनुकूलन संबंधी के लिए योग्यताएं हैं यह व्यक्ति के जीवन में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला प्रभावी प्रभावशाली ढंग से करने की योग्य बनाती हैं विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चिन्हित 10 जीवन कौशलों का विस्तार पूर्वक वर्णन भी किया गया है यह जीवन कौशल पुणे तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किए गए हैं आलोचनात्मक चिंतन निर्णय लेना अंतर व्यक्ति संप्रेषण कौशल मुकाबला करना आत्म प्रबंधन कौशल आवश्यक जीवन कौशल जो सामान्य रूप से सामान्य जीवन कौशल के रूप में माने गए हैं उन्हें विद्यालय स्तर पर विद्यालय पाठ्यक्रम और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित किया गया है राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद और राज्यों ने अपने विद्यालय पाठ्यक्रम में जीवन कौशल को सम्मिलित किया है जीवन कौशल कार्यक्रम कर मूलभूत अंगों व्यावहारिक क्रियाकलाप प्रतिपुष्टि और मुक्त व्यावहारिक क्रियाकलाप प्रतिपुष्ट और मुक्त चिंतन समीकरण और पुनर्बलन तथा दैनिक जीवन की चुनौतियों के लिए व्यावहारिक योग्यता चिंतन समीकरण और पुनर्बलन तथा दैनिक जीवन की चुनौतियों के लिए व्यावहारिक उपयोग के प्रयोग द्वारा सहभागी अनुभावनात्मक अधिगम की संस्तुति करते हैं विद्यार्थियों के जीवन कौशलों को बढ़ावा देने के क्षेत्र में कार्य विभिन्न संगठनों द्वारा कई विधियां सजाई गई है इनमें सम्मिलित हैं कक्षा कक्षा चर्चा ब्रेनस्टॉर्मिंग प्रदर्शन निर्देशित अभ्यास रोल प्ले लघु समूह कार्य के सर अध्ययन कहानी कहना वाद विवाद शैक्षिक खेल संगीत कला थियेटर और नृत्य आदि एक क्रियाकलापों विद्यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने स्वयं को दूसरों की भावनाओं पर मुक्त चिंतन करने और स्वयं तथा दूसरों की परिप्रेक्ष्य को समझने के अवसर प्रदान करते हैं जिससे एक भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति का विकास सुनिश्चित होता है।

आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा के प्रति स्वयं का एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। आत्मविश्वास, किसी व्यक्ति की दूसरों की मदद के बिना परिस्थितियों को सफलतापूर्वक संभालने और सकारात्मक आत्म-मूल्यांकन करने की क्षमता को दर्शाता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति हंसमुख, सक्रिय और हमेशा कार्य करने के लिए तत्पर रहता है। वह तत्पर और चिंता मुक्त होता है। वह हीन भावना या असफलता के भय से ग्रस्त नहीं होता। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा ऊँचाइयों को प्राप्त करता है। वह सामाजिक रूप से सक्रिय और परिपक्व होता है, उसमें नेतृत्व के गुण होते हैं और वह महत्वाकांक्षी होता है। आत्मविश्वास और सफलता के बीच एक सकारात्मक संबंध है।

आत्मविश्वास का जीवन में बहुत महत्व है। यह हमें न केवल सफल होने में सहायता करता है, बल्कि असफलताओं से उबरने की भी शक्ति देता है। आत्मविश्वास से भरपूर व्यक्ति अपने कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करता है, और उसके भीतर निर्णय लेने की क्षमता और साहस भी बढ़ता है। आत्मविश्वास की कमी से व्यक्ति खुद पर संदेह करता है और उसकी प्रगति में रुकावट आ सकती है। आत्मविश्वास व्यक्ति को नकारात्मक सोच से दूर रखता है और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

मूल्य मनुष्य की आंतरिक शक्ति है जो उसे विशिष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित करने के साथ ही उसके आचरण को शासित करती है। जिससे व्यक्ति का उत्कर्ष होता है। जब मूल्य की बात शिक्षा व समाज के संदर्भ में की जाती हैं तब वहां मूल्य से आशय उन आदर्शों, मान्यताओं व नैतिकता से होता है जिससे समाज को एक दिशा निर्देश मिलता है। सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, सौहाद्र, ईमानदारी, सद्व्यवहार, नैतिकता, कल्याणकारिता इत्यादि हमारे सार्वभौमिक व आधारभूत मूल्य हैं। मूल्य का विकास समाज में होता है सामाजिक सम्पर्क के परिणाम स्वरूप मनुष्य का नैतिक विकास होता है। मनुष्य का जीवन नैतिक मूल्यों के बिना अधूरा है। नैतिक मूल्य हमें सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाते हैं और हमें समाज में एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करते हैं। नैतिकता का महत्व न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह मूल्य हमें जीवन जीने का सही तरीका और दूसरों के साथ बेहतर संबंध बनाने की कला सिखाते हैं। नैतिक मूल्य वे सिद्धांत होते हैं जो किसी व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को सही दिशा में मार्गदर्शित करते हैं। यह वे आदर्श हैं, जो हमें सचाई, ईमानदारी, सहयोग, सहानुभूति, प्रेम और न्याय जैसे गुणों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह व्यक्ति के जीवन के हर क्षेत्र में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

नैतिक मूल्य व्यक्ति के आचरण तथा व्यवहार को व्यक्त करते हैं। नैतिक मूल्य का संबंध हमारी अभिरूचियों से है, ये व्यक्ति को पवित्र और संस्कारी बनाते हैं। इसमें ईमानदारी, त्याग, निष्ठा, सत्य बोलना, करूणा दया, उत्तरदायित्व की भावना, नम्रता आदि मूल्य आते हैं। विद्यार्थियों के जीवन कौशल का नैतिक मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन के महत्व को देखते हुए शोधार्थी की इनके परस्पर सम्बन्ध एवं परस्पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने में रुचि उत्पन्न हुई। अतः शोधार्थी द्वारा शोध के विषय का चयन किया गया।

समस्या कथन

विद्यार्थियों के जीवन कौशल का आत्मविश्वास और नैतिक मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का औचित्य

अपने घर के अतिरिक्त विद्यालय ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ विद्यार्थियों सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। वही विद्यार्थियों अपने ज्ञान तथा कौशल का विकास करता है। विद्यार्थियों के जीवन कौशल का आत्मविश्वास और नैतिक मूल्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। वास्तव में जीवन कौशल बहुत आवश्यक है। विद्यार्थियों में वे सभी आवश्यक गुण निहित होने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के अनुकूल वातावरण पठन-पाठन सम्भव हो सके। शिक्षक अपने आप को उस विद्यालय के दिशा-निर्देशों के अनुकूल ढाल सके तथा अपने पेशे के कार्य को उच्च कोटि तक ले जाने में समर्थ हो सके।

प्रस्तुत पदों की क्रियात्मक परिभाषा

1. **जीवन कौशल:** अनुकूल व्यवहार को वैचारिक, सामाजिक, व्यावहारिक कौशल संग्रह के रूप में परिभाषित किया है जिनका व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में कार्य करने हेतु आवश्यकता होती है।
2. **आत्म विश्वास:** एक प्रकार का Attitude है। जो स्वयं की हुनर और योग्यताओं पर भरोसा दिलाता है। confidence (आत्म विश्वास) व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास और भरोसा दिलाता है।
3. **नैतिक मूल्य:** प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहते हुए समाज के नैतिक संबंधी नियमों का पालन करना होता है। ये नैतिक संबधी नियम नैतिक मूल्य कहलाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास में सार्थक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के जीवन कौशल नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
- उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

Ho1. स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास में सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया जायेगा।

Ho2. स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के जीवन कौशल नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया जायेगा।

Ho3. उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

Ho4. उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के नैतिक
मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

अनुसंधान प्रविधि

शोध विधि

किसी भी अनुसंधान में सत्य की प्राप्ति के लिए एक शोध विधि को निश्चित करना होता है। वर्तमान में प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। इसे वर्णानात्मक अनुसंधान के नाम से भी जाना जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके अंर्तगत परिस्थितियों का वर्णन और विश्लेषण किया जाता है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

''जनसंख्या का अर्थ इकाईयों के समूह से होता हैं अर्थात इकाईयों के पूर्ण समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट हैं, जनसंख्या कहलाता हैं।'' प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रुप में लिया जायेगा। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए बिलासपुर जिले के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। न्यादर्श हेतु शोधार्थी ने ''यादृच्छित न्यादर्श विधि'' (Randam Sampling Method) का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल जागरुकता का आत्मविश्वास एवं नैतिक मूल्य पर प्रभाव के अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले का चयन किया गया है। जिसमें कुल न्यादर्श संख्या 600 है, जिसमें 300 कला तथा 300 विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन हेतु प्रदत्तों प्राप्ति व्याख्या विश्लेषण के लिए उपकरण की आवश्यकता होती है।

उपकरण के नाम

प्रस्तुत शोध में आकड़ों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा -

1. अंजुम अहमद और सबा परवीन - जीवन कौशल मापनी।
2. डॉ. सुरभि अग्रवाल द्वारा निर्मित मोरल वैल्यू इन्वेंटरी।
3. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित सेल्फ कांफीडेन्स इन्वेंटरी मापनी।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित चर है -
स्वतंत्र चर - जीवन कौशल।
आश्रित चर - आत्मविश्वास और नैतिक मूल्य।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधिया

1. Mean (माध्य)
2. Standard Deviation (मानक विचलन)
3. Standard Error Deviation (मानक त्रुटि विचलन)
4. सह-सहसम्बन्ध परीक्षण

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या

HO-1 स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

सारणी 1: स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास सार्थक सहसम्बन्ध की सारणी

विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	∑x2 and ∑y²	∑xy	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
जीवन कौशल	600	131	470742	118437	0.74	1198	0.05=0.062	HO -1
आत्मविश्वास	600	28	54884				0.01=0.081	परिकल्पना अस्वीकृत हुई

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्र. 1 में स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के 600 विद्यार्थियों के जीवन कौशल और 600 विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के बीच सहसंबंध की गणना किया गया है। उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर यह देखा गया है कि जीवन कौशन के विद्यार्थियों का मध्यमान 131 है तथा आत्मविश्वास के विद्यार्थियों का मध्यमान 28 है। दोनों के बीच संहसंबंध गुणांक r n '0.74 पाया गया, जो d.f1198 के साथ तालिका मान से .05 स्तर पर अर्थात् 0.062 और .01 स्तर पर अर्थात् 0.081 दोनों पर अधिक है। अतः 'r' का परिमाण दर्शाता है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास के बीच एक महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना -1 ''स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:-यह पाया गया है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और आत्मविश्वास के बीच महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक सहसंबंध है।

HO2. स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

सारणी 2: स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध की सारणी

विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	∑x2 and ∑y²	∑xy	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
जीवन कौशल	600	131	470742	194485	0.48	1198	0.05=0.062	HO -1
नैतिक मूल्य	600	144	351518				0.01=0.081	परिकल्पना अस्वीकृत हुई

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्र. 2 में स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के 600 विद्यार्थियों के जीवन कौशल और 600 विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के बीच सहसम्बन्ध की गणना किया गया है। उपरोक्त आँकड़ो के आधार पर यह देखा गया है कि जीवन कौशन के विद्यार्थियां का मध्यमान 131 है तथा नैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 144 है। दोनों के बीच संहसंबंध गुणांक r - 0.48 पाया गया, जो d.f1198 के साथ तालिका मान से .05 स्तर पर अर्थात् 0.062 और .01 स्तर पर अर्थात् 0.081 दोनों पर अधिक है। अतः 'r' का परिमाण दर्शाता है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल

और नैतिक मूल्य के बीच एक महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना -1 ''स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:-यह पाया गया है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के बीच महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक सहसंबंध है।

HO3. उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 3: उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास की सारणी

विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	t- परीक्षण	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
उच्च जीवन कौशल	145	38.5	7.85	0.77	15.67	441	0.05=1.97	HO -3
औसत जीवन कौशल	298	26.43	7.14				0.01=2.59	परिकल्पना अस्वीकृत हुई

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका 3 में स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के कुल 600 विद्यार्थियों में से 145 उच्च जीवन कौशल के विद्यार्थी और 298 औसत जीवन कौशल के विद्यार्थियों के बीच आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की गई है। जिसमें उच्च जीवन कौशल के विद्यार्थियों का मध्यमान 38.5 तथा मानक विचलन 7.85 है और औसत जीवन कौशल के विद्यार्थियों का मध्यमान 26.43 तथा मानक विचलन 7.14 है। प्राप्त आंकड़ों के गणना के पश्चात् प्रमाणिक त्रुटि 0.77 एवं 't' परीक्षण का मान 15.67 पाया गया है। प्राप्त मान सार्थकता स्तर-441 के साथ 0.05 स्तर 1.97 और 0.01 स्तर 2.59 पर तालिका मान से अधिक है। इसका अर्थ है कि उच्च और औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में महत्वपूर्ण अंतर है। अतः परिकल्पना संख्या-3 "उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा। अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:- यह पाया गया है कि, उच्च और औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के बीच आत्मविश्वास में महत्वपूर्ण अंतर है। यह निष्कर्ष में पाया गया है।

HO4. उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

सारणी 4: उच्च और औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के बीच नैतिक मूल्य की सारणी

विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	t- परीक्षण	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
उच्च जीवन कौशल	145	157.3	17.67	1.89	5.13	441	0.05=1.97	HO -6
औसत जीवन कौशल	298	147.6	20.65				0.01=2.59	परिकल्पना अस्वीकृत हुई

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्र. 4 में स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के कुल 600 विद्यार्थियों में से 145 उच्च जीवन कौशल के विद्यार्थी और 298 औसत जीवन कौशल के विद्यार्थियों के बीच नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की गई है। जिसमें उच्च जीवन कौशल के विद्यार्थियों का मध्यमान 157.3 तथा मानक विचलन 17.67 है और औसत जीवन कौशल के विद्यार्थियों का मध्यमान 147.6 तथा मानक विचलन 20.65 है। प्राप्त आंकड़ों के गणना के पश्चात् प्रमाणिक त्रुटि 1.89 एवं 't' परीक्षण का मान 5.13 पाया गया है। प्राप्त मान सार्थकता स्तर-441 के साथ 0.05 स्तर 1.97 और 0.01 स्तर 2.59 पर तालिका मान से अधिक है। इससे कहा जा सकता है कि उच्च और औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना संख्या-6 ''उच्च एवं औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला वर्ग-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:- यह पाया गया है कि, उच्च और औसत जीवन कौशल वाले स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के बीच नैतिक मूल्य में महत्वपूर्ण अंतर है।

उपसंहार

जीवन कौशल व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कौशल न केवल हमारे पेशेवर जीवन में, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी आवश्यक होते हैं। जीवन कौशलों का विकास व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक, और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाता है। जीवन में चुनौतियों का सामना करने, निर्णय लेने, और संबंधों को बनाए रखने के लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है। यह हमें एक सफल और संतुलित जीवन जीने में मदद करता है। जीवन कौशल सीखना और उनका सही उपयोग करना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। चाहे वह कोई भी उम्र हो, जीवन कौशलों का महत्व कभी कम नहीं होता। विद्यार्थियों का जीवन कौशल जितना अधिक प्रभावशाली व विद्यार्थियों के अनुकूल होगा, उसका उनके नैतिक मूल्यों का विकास उतना अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से होगा। जीवन कौशल विकसित होने की दशा में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य अत्यन्त उच्च पर होगा। अतः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा कला वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं। जबकि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं।

संदर्भ सूची:

1. डेमिरसिओग्लू ई और किलमेन, एस (2014) आलोचनात्मक चिंतन स्वभाव, पैमाने का एक अनुकूलन अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान जर्नल, 27 203-218 Doi no. http://dx/di.org/10.9761/JASSS2434
2. ओउने, ए. (2002) आजीवन शिक्षा में प्रमुख दक्षता, आजीवन शिक्षा को संस्थागत बनाया: एशियाई संदर्भ में वयस्क शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण, यूनेस्को शिक्षा संस्थान, हैम्बर्ग।
3. CBSE Teacher*s manual for Life skill Education and CCE of IX&X-cbse-nic-in
4. WH, 1986, The Otavacharter for Health promotion]UN
5. WHO, 1997, Geneva Life Skills Education for Children and Adolescents In Schools] Introduction and Guidelines

to Facilitate the Development and Implementation of Life Skills Programmes.
6. WHO,1999, Geneva Partners in Life Skills Education &Conclusions From A United Nations Inter&agency Meeting Department of Mental Health social Change And Mental Health Cluster-
7. नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क-2005 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली
8. ncert-nic-in
9. Tripathy, A-2016-a beautiful life life skill Education, New Delhi, Global publications
10. www-ibe-unesco-org
11. शर्मा, आर° ए°, (2011) अध्यापक - शिक्षा, एवं प्रशिक्षण तकनीकी आर° लाल° बुक डिपो, मेरठ।
12. शर्मा, आर. ए. (2002) शिक्षा प्रबन्धन-सूर्या पब्लिकेशन मेरठ ।
13. प्रज्ञा, श्रीवास्तव एवं अग्रवाल, देवेन्द्र, 2014, जीवन कौशल, मूल्य और व्यक्तिगत विकास International Journal of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.10, October 2014,
14. https://www.ijrte.org/wp-content/uploads/papers/v7i6s5/F11940476S519.pdfretrieved on 17/01/2020